Scholarly Research Journal for Interdisciplinary Studies,
Online ISSN 2278-8808, SJIF 2019 = 6.380, www.srjis.com
PEER REVIEWED & REFEREED JOURNAL, NOV-DEC, 2020, VOL- 8/62

कला मूर्त और अमूर्त

गीता अग्रवाल , Ph. D.

असिस्टेंट प्रोफेसर एवं प्रभारी, चित्र कला विभाग, साहू राम स्वरूप महिला महाविद्यालय बरेली (उत्तर प्रदेश)

Scholarly Research Journal's is licensed Based on a work at www.srjis.com

कलाएं अंतरात्मा की रूप विधान की सृष्टि है। गायक उसे स्वर् या ध्वनि से, चित्रकार रंग और रेखाओ से, कवि शब्द या वाक्यो से और नृतक भंगिमाओ से उसे व्यंजित करता है।

अमूर्तन २० वीं सदी के आत्मिक और सामाजिक संघर्ष के बदलाव की पहचान है। अमूर्त कला की अवधारणा कोई नई बात नहीं है बल्कि हम जिस तरह के समाज में रहते हैं और हमारी जो परंपराएं मान्यताएं और धार्मिक विश्वास हैं उनमें यह अमूर्त भावनाएं व सौन्दर्य सदियों से व्याप्त रहे हैं ।बस हमने उसे उस रूप में देखने व परखने की कोशिश नहीं की है। यदि हम गांव के किसी शालिग्राम की प्रतिमा या किसी घर के बाहर के द्वार पर स्थापित किए गए गणेश की प्रतिमा या किसी देवी के रूप में स्थापित पूजा के पत्थर या कथा कहानियों को कहते हुए गांव की स्त्रियों को देखें जो माता यानी देवी के रूप की कल्पना छोटे-छोटे पत्थरों में कर रही होती हैं तो अमूर्त की उपस्थिति नजर आने लगती है।

हर्बट रीड ने लिखा है 'All Art is abstract art '

देखा जाए तो अमूर्त कला हमारी भावनाओं और संवेग का एक दृष्टिगत संयोजन है, जिसे कलाकार कोई नाम नहीं देना चाहता।लेकिन उसकी उत्तेजना कुछ विंबो व आकारों में ढलकर चित्र स्पेस में दिखाई देने लगते हैं। जिसमें कभी पहचाने हुए से आकार भी स्पष्ट व अस्पष्ट रूप में चले आते हैं। प्रारंभ से ही कलाकार ने यह अनुभव करना शुरू कर दिया था कि, कलाकृति को उसके अमूर्त स्वरूप से ही सौंदर्य प्राप्त होता है। वह कला किसी भी शैली या किसी भी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

काल की बनाई हुई हो,उसकी सफलता उसके अमूर्त सौंदर्योत्मक गुणों पर ही निर्भर करती है। अर्थात रेखा, रंग, रूप, स्पेस आदि अनेक मूल तत्वों के समन्वय से ही कोई कलाकृति बनती है। उसके आकार गत निरूपण से नहीं। प्लेटो ने अमूर्त सौन्दर्य के बारे में कहा था कि 'व्रत आयत ऐसे आकार है जो किसी भी कारण से या उपयुक्तता की वजह से सुंदर नहीं, बल्कि सौंदर्य ही इनकी प्रकृति है। उसमें ऐसी सौंदर्यानुभूति होती है जो इच्छा रहित व निर्विकार है ।इसी प्रकार रंगों के विशुद्ध प्रयोग में भी यह सौंदर्य है।

सभी कलाओं में अमूर्त चित्रण सबसे अधिक मुश्किल काम है। अमूर्त पेंटिंग की मांग है ,आप रेखांकन अच्छी तरह करना जानते हो, संयोजन व रंगों के प्रति आप अत्यधिक संवेदनशील हो और साथ ही एक सच्चे कवि हों।

प्रभाव वाद, उत्तर प्रभाव वाद एवं फाववादी कला पद्धतियों में अमूर्त तत्वों की प्रस्तावना आरंभ से ही देखी जा सकती है। प्रभाव वादियो ने चित्र में संपूर्ण प्रभाव को अपना लक्ष्य बनाया तथा मुक्त अंकन शैली के द्वारा रंगो के सौंदर्य और चित्र धरातल की ओर सबका ध्यान आकर्षित कराया। तो फाववादी व अभिव्यंजनावादी कलाकारों ने इससे कुछ और आगे बढ़ कर चित्र के रंगों में सौंदर्य तत्वों का विकास करने के उद्देश्य से उनके नैसर्गिक गुण से हटकर उनकी प्रतीकात्मकता और अत्यंत सरलीकृत आकारों पर विशेष जोर दिया।आगे चलकर धनवादी और भविष्य वादी कलाकारों ने ज्यामितीय आकारों को अपनी अभिव्यक्ति का लक्ष्य बनाया और कला के मूल तत्व को और भी निकट से पकड़ा।

आधुनिक कलाकारों ने संगीत सरीखे अमूर्त तत्वों का विकास व प्रयोग अपने चित्रों में प्रारंभ किया ।जर्मन दार्शनिक शॉपइनहाऊर ने इस संबंध में कहा है कि 'सभी कलाएं संगीत की ओर प्रवृत्त है'। अमूर्तवादी विचारधारा को बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में एक सुनिश्चित रूप प्राप्त हुआ।जब कानदिस्की ने जल रंगों में कुछ अमूर्त चित्रण किए और मोडियान ने धनबाद के स्थाई रचना सौंदर्य को अमूर्तन की ओर विकसित किया। कानदिस्की ने फाववाद व अभिव्यंजनावाद

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

के भावपूर्ण गतित्व को अमूर्तता की ओर मोड़ दिया।पाश्चात्य अमूर्तकला में कांदिस्की से शुरू होकर जैकसन पोलॉक तक आते-आते अनेक संवेग जुड़ते और घटते रहे हैं।

भारतीय आधुनिक कला मंच पर भी हमें ऐसे कलाकार दिखाई देते हैं जो इस कला के प्रति बहुत अधिक समर्पित रहे हैं प्राचीन शास्त्रीय और लोक कलाओं में यह तत्व किसी न किसी रूप में देखे गए हैं। जैन शैली के चित्रों में रूप गत अमूर्तता तथा रंगों की प्रतीकात्मक अमूर्तता को भलीभांति देखा जा सकता है। राजस्थान की विभिन्न शैलियों (मेवाड़ व मालवा) के चित्रों में लोक शैली के तत्वों के साथ-साथ रंग व प्रकृति के सरलीकृत अभिप्रायों में भी यह अमूर्तता दर्शनीय है। हमारे देश के अनेक कलाकार अपने विशेष संदर्भो और अर्थों के साथ इस अमूर्तता की अवधारणा से जुड़े रहे हैं। एस एच रजा ,शांति देव ,गायतोंडे, मोहन सामंत, रामकुमार, के सी पणिक्कर, एन एस बेंद्रे ,ज्योति भट्ट, कृष्णा रेड्डी आदि के नाम विशेष रूप से याद किए जा सकते हैं, और आगे नरीन नाथ, एस आर भूषण,प्रभाकर,कृष्ण खन्ना, अकबर पदमसी, ज्योति स्वरूप, सुरेश शर्मा आदि को भी इसमें शामिल किया जा सकता है।

भारतीय मूर्तिकला के दृश्य पटल पर रहस्य और तंत्र से प्रभावित होकर भी इस अवधारणा को एक नए संदर्भ और अर्थ में प्रस्तुत किया गया है। जी आर संतोष,ओमप्रकाश,हरिदासन व प्रफुल्ल मोहंती आदि ने भारतीय तांत्रिक प्रतीकों के माध्यम से अमूर्तता की एक नई परिभाषा विकसित की।उनके अर्थ में फैली भ्रांतियों को दूर करने के लिए यह जानना बहुत आवश्यक है कि उसमें सादृश्यता को बिल्कुल नकारा नहीं गया है ,बल्कि उसकी प्रस्तुति दूसरे प्रकार से होती है। जिसमें विषय को खोजना व्यर्थ होता है और उसमें संगीतात्मक दृष्टि महत्वपूर्ण होती है। बहुत से कलाकार ऐसे हैं जिन्होंने आकृति मूलक कला व अमूर्तकला में एक अच्छा संबंध बनाए रखा। इसमें पाउलोक्लै का नाम प्रमुख है।

आधुनिक कला की दृष्टि से कलात्मक गुण तथा आकारों का सरलीकरण, रंगों का स्वाभाविक निर्मल सौंदर्य, प्रतीकात्मक्ता , प्रभाव पूर्ण संयोजन आदि तत्व प्राचीन भारतीय कला शैलियों में प्रचुर मात्रा में पाए गए हैं। और पुनरुत्थान काल की कला में रविंद्र नाथ ,अमृता शेरगिल, यामिनी

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

राय के चित्र में मानव आकृतियों की उपस्थिति के बावजूद सृजनात्मक तत्वों से भरपूर थे।कलाकृति में सौंदर्य,आनंद और रस का घनिष्ट संबंध होता है, जिन्हें एक दूसरे से पृथक नहीं किया जा सकता।

रविंद्र नाथ ठाकुर ने सौंदर्य, आनंद और रस आदि कलाकृति के अमूर्त भाव बताएं हैं, जिन्हें सिर्फ महसूस ही किया जा सकता है। रवींद्रनाथ ने अपने चिंतन द्वारा इस जगत से परे ना दिखने वाले अलौकिक एवं पारलौकिक जगत की अनुभूति का दिग्दर्शन अपने चित्रों में कराया है। यह चित्र आकृति मूलक होते हुए भी अमूर्त भावना से ओतप्रोत रहे ।क्योंकि जिस तत्व व भावनाओं पर उनके चित्र आधारित रहे वे दरअसल अमूर्त हैं।

अमृता शेरगिल ने आधुनिक भारतीय कला को एक नया रास्ता दिखाया। उनके सरलीकृत आकार भारतीय देहात के प्रतीक बन गए, जो कला के नैसर्गिक सौंदर्यात्मक गुणों से ओतप्रोत थे।

यामिनी राय भी इसी कड़ी के चित्रकार थे जिन्होंने बेहद सरल और निर्भीक आकृति चित्रण से बंगाल की लोक कला का रचनात्मक इस्तेमाल किया।उनके चित्रों में अंकित आकारों को हम पूर्ण तया अमूर्त गुणों से ओतप्रोत मान सकते हैं।

समकालीन भारतीय अमूर्तकला के परिदृश्य में तंत्र से प्रभावित जी आर संतोष के चित्रों के आकार बेहद सलरीकृत लेकिन पूर्ण रूप से पहचाने जा सकने वाले आकारों का संपुंजन होते हैं।जिसमें कमल, बादल,पर्वत आदि के आकार भी देखे जा सकते हैं।

हुसैन ने अपने चित्र संसार में न केवल मूर्त अमूर्त की समस्या से जूझने की सार्थक कोशिश की है बल्कि कला और दर्शकों के बीच की खाई को पाटने की भी कोशिश की है।

अमूर्त एक ऐसी कला है, जो वस्तुओं को वैसा ना दिखाएं जैसी वे दिखाई देती हैं, बल्कि ऐसी जैसी कि कलाकार उसके बारे में सोचता है। अमूर्त कला एक रचना बनाने के लिए आकृति ,रूप ,रंग और रेखा की दृश्य भाषा का उपयोग करती है,जो दुनिया में दृश्य संदर्भ से स्वतंत्रता के साथ मौजूद हो सकता है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

इसीलिए १९ वी सदी के अंत तक कई कलाकारों को एक नई तरह की कला बनाने की जरूरत महसूस हुई,जो प्रौद्योगिकी, विज्ञान और दर्शन में हो रहे मूलभूत परिवर्तनों को शामिल करेगी। अमूर्त कला को समझना आसान है, इसके लिए आवश्यक है एक खुला दिमाग और एक बड़ी कल्पना और एक जिज्ञासु मन की आवश्यकता होती है।

"हर कोई कला को समझना चाहता है; एक पक्षी के गीत को समझने की कोशिश क्यों नहीं की गई ।जो लोग चित्रों को समझाने की कोशिश करते हैं वह आमतौर पर गलत पेड़ को काटते हैं"पाब्लो पिकासो।

पिकासो के पास एक बिंदु है।कला को शब्दों में पर्याप्त रूप से नहीं समझाया जा सकता है ,इसीलिए कला एक अनुभव है।

"Abstract art is not just colouring, its presentation of your unique imagination:" Tarun Kumar

अमूर्तता भले ही चित्रकला में १९ वीं सदी में एक अवधारणा के रूप में आई, पर ऐसा नहीं है कि इसके पहले ऐसी चीज कला में थी ही नहीं.। सदियों पूर्व शैलाश्रयों में अमूर्त रेखाएं ही उकेरी मिलती हैं जिनसे हम सभ्यता के आरंभ को देखते हैं। जीवन में बहुत कुछ अमूर्तता में घटित होता है। हमारी सोच का एक सिरा हमेशा अमूर्त रहता है। हमारे स्वप्न के अक्स अधिकतर खंडित दिखते हैं। सबसे अहम बात यह है कि स्मृति सदा धुंधले अमूर्तनों में ही प्रकट होती है जो तनिक ठहराव के बाद रूप धरती है। निराकार, निर्गुण, अरुप की चर्चा सदियों से होती आई है। अमूर्तन वस्तुतः वह शून्य है जो निदाग है। उसमें रूप की कल्पना भर होती है। अमूर्त कला उस अंतर्ध्वनि की तरह होती है जिसे हम सुनते हैं, मुग्ध भी होते हैं पर जिसको देखने में हमारी बुद्धि कम, कल्पना अधिक काम आती है। दर्शन, अध्यात्म, जीवन, रहस्य, प्रकृति, परा संसार तथा अलौकिक सूक्ष्मताओं और भेदों से भरी सृष्टि को अंकित करना और उसे एक दृश्यात्मक लय में उपस्थित करना, निबद्ध करना अमूर्त कलाकार की कुशलता का प्रमाण होता है। इस समय के अमूर्त कलाकारों में सर्वथा अलग ढंग से पहचाने जाने वाले योगेंद्र ऐसे विरल भारतीय अमूर्त कलाकार बनकर सामने आते हैं जिनकी कृतियों में हम आसानी से अपनी परंपरा और आधुनिकता का समावेश देख सकते हैं। यह कला संसार इस अर्थ में भी नायाब है कि इसमें ऐसे तत्व भी हैं जिससे हम आसानी से सामान्य कला प्रेमी को भी जुड़ता देख सकते है।

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language

संदर्भ ग्रंथ सूची

आर वी साखेलकर आधुनिक चित्रकला का इतिहास
विनोद भारद्वाज वृहद आधुनिक कला कोश
विनोद भारद्वाज समकालीन भारतीय कला
ममता चतुर्वेदी सौंदर्य शास्त्र
डा कृष्णा महावर पश्चिमी संस्थापन कला
डा कृष्णा महावर नवीन कला
राम चंद्र शुक्ल कला और आधुनिक प्रवृत्तियां

Copyright © 2020, Scholarly Research Journal for Humanity Science & English Language